Batan

बातां 21

BIRLA COLLEGE LIBRARY
16,562
PILANI

MR
13

MR
13

091.954
R1.42RB
R 1:42
16562
C/66
C/81
986

Rs 4-8-3

४॥।) @ 0-4-0
per page of
250 words.

$$\frac{\text{पृ. ३६} \times \text{१८ पंक्ति} \times \text{७ शब्द}}{\text{२५०}} \times \frac{\text{४}}{\text{१६}}$$

= ४ रु. ८ आ. ३ पा.

## शीर्षक - सूची

हस्त-लिखित प्रति - ४


प्रारम्भिक ... ... ... पृष्ठ

१. अण आई राड़ ... ... ... १
२. ढेडणी को फेगर कूटो ... ... ५
३. मोदूड़ो ... ... ... ८
४. आड़ को लाड ... ... ... ११
५. टसकोली ... ... १३
६. कांडे नै कांडो ... ... ... १५
७. लाल बुझाकड़ जी'र काच ... ... १८
८. लाल बुझाकड़ जी'र रूखतारो २०
९. बाणियूँ'र चूसो ... ... २१
१०. बुझाकड़ जी'र हाथी २३
११. " " " २४
१२. बुझाकड़ जी'र रूंखनी ... ... २५
१३. ठाकराँ'र ऊँट ... ... २७

१४ टसकोली ... ... २७
१५ टसकोली ... ... २८
१६ टसकोली ... ... २९
१७ टसकोली २९
१८ टसकोली ... ... ३०
१९ सुमड़ो सपारी ... ... ३३
२० जारड़ोर मोयाँ ... ... ३५
२१ जारड़ोर उकोल जी ३८


संग्राहक – गणपति स्वामी

अणभाई गाड़-१

गणपति स्वामी।

दो जाट सागै-सागै अेक गाँव हूँ दूसरै गाँव जाय रा। सो गेलै में अेक चितरँग ताल को खेत आयो। जाट नै जिसो खेत प्यारो लागै उसो ओर क्यूँ बी कोनी लागै। सो ऊँ नै देख की बाँ क्रै बड़ी खुस्याली हुई हर बाँ को जी चालग्यो तो कूड़ियो देख की फूड़िये नै बोल्यो

कूड़ियो- हैं रै फूड़िया! जे आपणैं यो खेत लाध ओज्याय तो आपाँ के करौं रै?

फूड़ियो - आपाँ आदो-आदो बाँटल्याँ।

कूड़ियो- तूँ थारलै अधवाड़ै को के करै? मैं तो म्हारलै अधवाड़ै में कोड्याली जुँवार मोतीसो बाजरो, जेठा मूँग हर मेटरड़ो बाऊँ।

फूड़ियो- मर्र! मैं तो म्हारलै में ऊँट चराऊँ, गाय चराऊँ, भैंस चराऊँ भेड़ चराऊँ हर बकरी चराऊँ।

कूड़ियो- रै तो के म्हारलै खेत नै भेलन दे

फूड़ियो – तो कै तूँ थारलै कै आगै कुतको ले
कर खड़्यो हो ज्या।

कूड़ियो – हाँ, सारै दिन मैं थारलै डाँगराँ कै आगै
कुतको लियाँ ही खड़्यो रहूँगो ? मेरै किसो
और काम थोड़ो ही है, बावला ?
तूँ डाँगर चरावै ही क्यूँ ? टाल क्यों न करै

फूड़ियो – तूँ मोठ-बाजरो बोवै ही क्यूँ ? टाल क्यूँ न करै

कूड़ियो – जणाँ तूँ चोदरी को बेटो मन्नै खेत बातो रोकैगो

फूड़ियो – जणाँ तूँ चोदरी को बेटो मन्नैं डाँगर चरातो रोकैगो

कूड़ियो – तो आज्याये तूँ तेरी चूँण लेयकी ?

फूड़ियो – तो तूँ बो बा लेये तेरो खेत ?

कूड़ियो – मेरो खेत मेल्याँ गुवाल कै ठेके की नासटी चीरधूँ

फूड़ियो – मेरी डाँगर रोकबाला की बाँफण बाल धूँ।

कूड़ियो – जीब नै सम्हाल की बोल नहीं तो नाकटी
मसल देऊँगो।

फूड़ियो – नासटी मसलबाला मरग्या छपनै काल में

कूड़ियो – चुपको रै नहीं इब ही कंठ को मैल उतार धूँगो

फूड़ियो – मूँन की बायूँगो।

कूड़ियो – खड्यो रै धी का मुरगा ?
फूड़ियो – आगै नै आव रै चूड़ा ?
सो दोनवाँ धम-धेसड़ा उठाया रर खोरण बाजण लागी। सो जैं कै खोरण की लागै बैं को ही मारयो टूर उठै। बाँ की दड़ादड़ सुण की खेत को धणी भाज की आयो रै कै बेटी को बापो क्यूं लड़ो रो ? अर बो लड़ताँ कै बीच में पड़ की दोनवाँ नै न्यारा न्यारा करया। अर लड़बा-चुलबा को कारण बूज्यो तो कूड़ियो बोल्यो कै म मैं तो ई खेत नै बावू रोख्यो अर यो मिलाऊ रोख्यो है। जणाँ बो चिलव्यो रै कै बेटी को मूवो यो खेत तो मेरो है थाँ बाप को कोनी थे ई का कैयाँ धणी बण्या ? कैयाँ तो तू बावैगो रर कैयाँ यो मिलावैगो। जातो रो नहीं तो दूँगती चुगल्यूँगो आछी देख देख। रब बाँ की आगै नै गाँवतैरे जाणै की तो सरदा को रही अर बै तिग धीसताँ २ पाछा धराँ नै आया। घैर आयाँ नै घर काँ बूज्यो रै कै थे ता

गाँव गया हा न ? पाछा ही थैंयाँ आयग्या
जणाँ बाँ कही कै म्हारी तो अैंयाँ अेक
चितरँग ताल पर आपसरी में धुलाई होगी
मैं तो बीं नै जाणू हो अर यो बीं नै
मिलाऊ हो ।

" को भैंस न को पाड़ो'र ढेडणी को मेगर-कूटे

( गणपति स्वामी )

दो ढेड-ढेडणी हा। बाँ नै अबै गाँव में
कोई बी छाय की टोक्सी कोनी घालतो
खरसै की करड़ी तुत ही सो बै धींणैं बिना
दुख पावै हा। अेक दिन ढेडे ढेव की
बोल्यो कै कोचिये की मा! तूँ कै (कहै) त
आपाँ अेक भैंसड़ी लियाँवाँ। जद ढेडणी बो
कै हाँ कोचली का बाबा! लियावो स्याणू
मेरै पीर का बो मोत दुख पावै है। बाँ
आँख्याँ देखण नै बी धोली धार कोनी
सो मैं मरूँ छाय की हाँडी हर मायाँ कै दिया
मरूँ दही की हाँडी हर भतीजाँ कै दियाऊँ।
मरूँ दूद की हाँडी हर मा-बापाँ नै दियाऊँ।
पीरकाँ को नाँव सुणताँई ढेडिये कै तन-त
में लागगी। हर बो खमसायो कै क्यूँ रै राँ
नकराडी? तूँ मेरलो घर कैंयाँ खोवै है?
जे धोवण को टोपो बी पीरकाँ नै घाली
तो मैं राँड की घेटी तोड़ गेरूँगो। पीरकाँ नै
पटक कूवै में। कूवे को नाँव सुणताँ

ढेडणी कै ओडी की चोरी लागी। हर बार चिणखाई बोली कै मेरै पीरकर कूवै में क्यूँ पड़ें? कूवै में पड़ तूँ। तेरी जावा हर तेरी सात पीढ़ी। मैं पीरकाँ नै देती तेरै बाप की री बरजी कोनी हूँ। मैं तो धूगी, धूगी निपुता धूगी। ठोसर देती ढेडणी नै देख की झाल में ढेडणी को नकतोड़ो फूलग्यो हर ऊँण आँदो-बावलो होकर राम-सीगो सम्हायो। हर टूकयो कै खड़ी रै तेरी मा-धाँऊ गतराड़ी की। अब खुवायूँ हूँ तेरै पीरकाँ नै म्हारली भैंस को धीणूँ। सो आँख मीच की हर मारयो रामसीगो ढेडणी कै सो गड़ीड़ उछ्यो। हर गड़ीड़ पर बोल मारयो कै मरै हँडीर भायाँ कै। हर फेरूँ फिराय की राम-सीगो ढेडणी कै मारयो सो गदीड़ ~~उछ्यो~~ उछ्यो अर गदीड़ पर बोल मारयो कै मरै हँडीर भतीजाँ कै। ओजूँ घमकाय की रामसीगो ढेडणी कै मारयो सो गड़ीड़ उछ्यो। अर गड़ीड़ पर बोल मारयो कै मरै हँडीर मा-बापाँ कै।

ऐक ठाकर लोग बाड़ तलै खड़्यो र ढोडिये का औ चँरन देखै हो। सो बो ढोडिये नै सीव देबाटै ठै घर में आयो हर आड़ समजाँवणी सम्हाई। आवतै ही उँठा ढोडिये नै घसड़कावणी ही हर नबड़ पक्डै लियो भूँलै हय्याँ। बोल्यो औरै ढेड! ई भैंस नै सूँनी कैयाँ छोड राखी? मेरो सारो खेत मेल दियो। सारी ही सूँनेड़ देवली पग माँड ची का मुरगा। खोलै भैंसा'र खेड़ै में। हर दे आड़ समजाँवणी की सो मार्यो पटीड़ उठै। खोलै भैंसा'र खेड़ै में। हर फेरूँ दे आड़ समजाँवणी की सो मार्यो सटीड़ उठै खोलै भैंसा'र खेड़ै में। हर औजूँ दे ढोडिये कै सो मार्यो गटीड़ उठै। सो दो तीन झटकाँ में ही ढोडिये पादरो हप करदियो हर गरलाय की बोल्यो कै ठाकराँ! थारै खेत में ओर कोई की ही भैंस चरगी होगी मींगै नै बलाय की खोज कढ़वाल्यो। जद ठाकर औजूँ घसड़कायो कै ओर कोई की कोनी चरी? तेरी चरी है तेरी। रब

ढेडियो परर धूजै लाग्यो हर कैलाप
जोड़ कर बोल्यो कै ठाकराँ! अजगुन्नै
मतना मारो। म्हारै घराँ भैंस कैंवी?
बकरी बी कोनी। चाये आडोसीपाड़ोसी
नै बूजल्यो। तो कै थारै घराँ भैंस
कोनी तो तूँ ई गाँड नै क्यूँ कोटै है?
आ पीरकाँ नै कुँणसी तेरी दरीछडी
दिखाई? जणाँ ढेडिये नै चेत हुयो
हर बो मोत पिसताग्यो। कँपूबै उँण औत्नी
साँटै ढेडणी नै मारी ही।

## मोदूड़ो - ३
( गणपति स्वामी )

अेक चमार हो। बो आप कै खेत माँ हूँ मण-अधूण की सिट्टी उतरी ही सो बाँ नै कूट-छाँट कर मणेक बाजरो पाँड बाँन्या ल्यावै हो क्रिंकर कै क्यूं थापड़ थापड़ काल सोई हो। घर-हाली पूरै-माँस हर पूरै-दिनाँ बैठी ही। जिण सूँ बा खेतीरी खेव सैण जोगी नहीं ही। सो सारै दिन खेत-खलै में बो अेकलो पचतो। सो अेक तो काल को सतायोड़ो हर बीजाँ खेती कै काम हूँ अेकलो थको आवतो हुयोड़ो तीजाँ पाँडली क्यूं बोजल ही क्रिंकर कै बो दोबिरियाँ फिरबा की तूँमत न करकी सारी बाजरी अेक बर में ई बाँध ल्यायो। सो बो बोज्याँ मरतो थकेल जद गाँव कै गोरवैं पूग्यो तो ऊँ नै अेक पाली फेट्यो। हर बो पड़तो ही चमार नै बोल्यो कै "मामीजी" आज थारै बेटो जायो है। बेटै को नाँव सुणताँ ई उँण ठैदे आपकै

पॉड धरतियाँ पटकदी हर बोल्यो कै
"हूँ" बेटो जायो है तो आपैई लेज्यागो
मां दिराय की।" जे ऊँ नैं बाजरी खाँण नैं
चायेगी तो। मैं रब ठालो क्यूँ पचूँ।"
सो बो तो पाँडली बगाय की चल्यो गयो
हर गैल हूँ डाँगर पड्या सो भाखोलियो
बी चिगल गेर्यो हर बाजरी भी चाबग्या

आड़ू को लाड़-४

(आड़ू को लाड़)

एक जाट हो । सो ऊँ कै गुढ़ापै में बेटो
जायो हो । गुढ़ापै को जाबा मायत नै मोत
प्यारी लागै । सो बो गीगलै का आतो-जातो
मोत लाड़ करबा करतो । एक दिन जाटणी
तो गोबर-मोरै में लागगी हर गीगलै नै
आंगणं में खटोलै पर सुवायगी । जाटड़ो
जेली लेय की खेई खातर खेत में चाल्यो ।
तो बो रोजीनाँ की नेई ठैदे खटोलै कै
पासै आयो हर जेली का सींगाँ हूँ छोरै कै
गदगदी करबा लाग्यो कै ओरै चूसिया !
आलै जेली हर खेत माँ रूँ खेई लिया ।"
छोरै कै जेली का सींगाँ अड़्या जणाँ गदगदी
हुई हर बो गट गट गट गट हँस्यो । जाटड़ो छोरै
नै हँसतो देख कर मोत राजी हुयो हर ऊँणओ
ज्यादा जोर देकर जेली का सींगाँ छोरै कै पेटपर
गोथल्या । छोरो ओर घणूँ हँस्यो । हर जाटड़ो
ओर घणूँ राजी हुयो । हर राजी होकर जाटड़ै छोरै

बै पेट में जोर हूँ सींगाँ गडोया। छोरो कचिया फूल हो हर जाएडै बै आँदे जोर को बे थांग? सो जेली का दोन्यूँ सींगाँ कचरदे सी छोरै बै पेट माँ की नीकलग्या।

## टसकोळी - ५
(गणपति स्वामी)

अेक रंडो बामण हो हर अेक ही कंजूसली सेठाँणी। बै दोन्यूँ आड़ोसी-पाड़ोसी हा। सेठाँणी खाती-पीती हर मोत धापती ही क्यूंकर कै बीं का बेटा-पोता बदेस कमाता अर घणूँई पीसो तोड़ता। पण बा मूरखै घर कीटै सो बीं हूँ कूकरै नै अदो टुकड़ो बी कोनी पड़तो नी। बामणियूँ त्यागपत हो। बो दो रोटी की बेकरड़ी कठै हूँ हूँढ ल्यातो हर ऊँ का दो रंडक रोट बणालेतो हर कोरा मोरा कड़क लेतो। क्यूंकर कै तरकारी तींवण को बीं हूँ हड़दंगो कोनी होतो। कदे-काऊ बो सेठाँणी नै छाय-पलेवै खातर टोक बी लेतो तो बा हड़क-भड़क इसो मीठो जाब देती कै बामणियें की बोली बँद हो ज्याती। अेक दिन अणदक सेठाँणी हेलो मार्यो कै दादा! छाय लीं ही के? तो बामणियें पडूतर दियो कै सेठाँणी जलम धार की बी तूँ कदे लगाँवण कोनी चाल्यो।

आज छाय कैंयाँ घालै रै? छाय में
चूसो पड़ग्यो रे। धायो तेरी दहीण्डी।
परैई राख मैं तो को ल्यूँ न। क्यूँ कै
मेरै मन में स्याहाग है।

कौंडे नै कौंडो - ६.

(गणपति स्वामी)

अेक ठाकर लोग अेक नायक नैसीतङूं नोकर राखतो। किंकर कै नोकर राखतो बिरियाँ ऊँण नायक ङूं या बोथ करी ही कै नित की दिनगे थौरे घराँ ङूं कोटड़ी में आवतो तमाखू कूट करी सागै लियापा कर सो सारै दिन भर हूका भरर म्हाँनै बी पाया कर हर तूं बी तेरी चिलम भरर मोकली पीया कर। पण म्हारो हूको मदवै मह्ये री नाँई कोटड़ी में दिन भर गाजतो ही रैणू चायजै। हर उगे-छिपे बीच हूको ठालो न रैणू चायजै क्रिंकर कै हूको रिजक-बँद रजपूत री कोटड़ी रो माँडण है। बीजी बोथ या करी ही कै जे को पाँवणू-पटी या बटाऊ-चटाऊ कोटड़ी में आ उतरै तो ऊँ कै खातर सुवा-सेर गींवाँ को आटो, आद पाव दाल, पाव मिठाँण, पाव की चोथी पाँती घिरत चाँयताँ मिरच मुसाला,

न्याय की म्हारी कोटड़ी में देदिया कर
रस गोळी-चाँदी रसोवड़ो कर रर आये बराऊ
रो थाळ लगादे। जे म्हाँ का रावळा आटै
क्यूँ सजीव सामान ल्यावै तो थाँकी और
बी बड़ाई छै। पण म्हाँ की कोटड़ी भूखो
बराऊ आवै पण भूखो जावै नहीं। ईंण सूँ
रिजक-बंद रजपूत री कोटड़ी री आवरू बधै
रर दूर दूर ताँणी ठिकाणाँ में पैठ जमै जिंण
सूँ घर बैठ्याँ कँवराँ री सगाई आवै
रस कोई कँवर रँडवो ना रैवै।
तोजी बोध या ठेरी के थारी खिदमतगारी
तमाखू रर सरोवड़े रै सामान रा दाम छोड
मरिनैं जद छमावो चूकसी तो ओरूण साथै
साँवठा मिल ज्यासी। नायकड़ो कामदारी को
भूखो अणमोल में ठाकराँ की बात में आयग्यो
रर रावळी चाकरी बजावण लाग्यो। ठाकराँ
की कोटड़ी चोरसतै पर ही सो हूक्के-पाणी
खातर गेलारथू आबो-जाबो ही करबो करता

कदे दो आयग्या तो कदे दो नीसरग्या। पण दिन में को दस को ठेडो रैतो न को बीस को। तो सारै दिन नायकड़ै की चकरी बँधी रैती. अेकेक दिन को बोलक लागै है. सो नायकड़ै कै छ आयग्यो'र सोनू सॉपड़ग्यो. हर उन्नै ठाकरड़ो दोन्यूँ हाथाँ हूँ नायकड़े नै लूटणूं सरू कर दियो. रब नायकड़ै कै जीव की घ्यारी मँचगी. हर बो सिरॉवडो छूडवण नै तड़ाव करण लाग्यो. पण जुगत कोनी पाई.तोके वरीरै नायकड़ो अूँलो चालै लाग्यो. सो जो ठाकर ओडोवै बैं हूँ अूँलो काम करै. पण ठाकर बी जाणग्यो कै नायकड़ ओलो पैरलो है सो बो बीं की बडाई करण लागग्यो. हर नायकड़ै नै उजाड़ करणे पर बी कोनी टोकतो. तो हर की अेक दिन नायकड़ै ठाकर की काणती आँख में पूक दियो. हर ठाकर बोल्यो कै धन है रै नायकड़ा तेरी मातपिता नै. तेरो पूत तो मोत सीलो लाग्यो. जद नायकड़ो बोल्यो कै मेरो पूत सीलो है तो कोई तातो पूकणियें नै राखले. मैं तो ओ जाऊँ हूँ.

लालबुझाकड़ जी रर काच-८

( गणपति स्वामी )

पैली कै भगताँ में बीकानेरिया माणस मोत भोला हुया करता। बाँ नै अेक को दो को बी बेरो कोनी हो। बैरोई का रोझ हा। सो जे कोई अदीठ बसत निजरचा पड़ ज्याती तो बीं को सारै गाँव में गूँगदो उठ खड़्यो होतो। रर बै भाज की बूजबुझाकड़ जी कै कन्नै जाता। बूजभुजाकड़ जी बाँ को बी ऊपरलो पाट होतो। बै रोई का रोझ होता तो बो बण को मूँछ। बो जैयाँ तैयाँ कर की बात नै कठा ढाल देतो। गाँवगैल अेक बूजबुझाकड़ अलबत होवतो। अेक बर अेक सेखाटी को छैल बीकानेर की मेंचल्यो गयो सो ऊ को काच गेलै बगताँ कोई गाँव के गोरवै टै पड़्यो। सो जद गाँव का बूड बडेरा जंगल फिरागत नीसरचा तो बाँ नै बो काच गेलै में पड़्यो पायो। सो बीं काच

राम गिर
गाँव– खाँनपुर
डा. निरवाणू
जि. पटियाला

नै देख कीं'र डाँवरग्या। रै कै मैंण को भायो ! यो काँई ? सो सुर-सुर अेवक दोरो हर सारो गाँव भेलो होग्यो। पण बीं को बेरो कीं नै बी को पाख्यो न जणाँ अेक भाजतो दोय भाज्या हर दोय भाजताँ च्यार भाज्या। सो है लालबुझक्कड़ जी कै कनै पूँच्या। कै साय आज तो कोड़ी कै मूँ में भैंस पजगी सो थारै बिना निकसै नहीं। तो कै चालो हूँ चालसूँ परो। सो काचरै पासै लालबुझक्कड़ जीपूग्या हर काच नै ओलखताँई बोल्या कै रै मैंण रो भायो! थारी ऊमर कैंयाँ टूटसी ? कै किंकर बाप जी ? रै कै थाँ नै आँ छोटी-बाताँ रो बी "ठा" कोनी पड़े ! ओ (काच कानी आँगली करकी) काला चाँन रो चनरोलियो है अर कां उगतो सूरज तूयग्यो ।

बुझाकड़ जी हर फूट्यो खतारो - ८

( गणपति स्वामी )

अेक बिरियाँ बीकानेरवाटी में सेखावटी हूँ कोई सादड़ाँ की मंडली मतीरा खाँण नै गई ही। सो कहीं खेत की पड़ाल में खतारो पड्यो रैग्यो। सो जद गुवाल-पालियाँ ऊँ नै देख्यो तो बाँ कै अचंभो होग्यो कै यो कांई है यो कांई ? बाँ को बैदो सुण की खेत-खलाँ हूँ दुर दुर से आदमी भेला होग्या'र खतारै कै कुण्डारियो दे लियो। पण उरतो हाथ कोई बी कोनी घालै। छेलै नाकै लालबुझाकड़ जी नै बुलाय की ल्याया। सो बे बड़बड़ाता ही पूग्या। रै कै मैं थारी घाली क्याँ में बड़ ज्याऊँ ? थे खायग्या म्हाँनै तो चूँट की। ना कै बाप जी इसी बात ना कैहो थारै नाराज हुयाँ म्हाँनै फिकर सरै। रै तो कै कूँ कैयाँ कोनी। आँ छोटी'र बाताँ रा कूँटा बी थारै हूँ कोनी नीसरै। यो (खतारै कोनी आँगलीका तो कठलौणे देवता रो धूपियो है अर का बडे घराँ री होई।

बाणियूँ हर चूसो-ई,

(गणपति स्वामी)

अेक बाणियूँ आप की बैठक में सूत्यो पड़्यो हो। सो सूत्ये के पेट पर की अेक चूसो नीसरग्यो। बाणियूँ हबड़ख की उछ्यो हर उठतो ही ढाँ-ढाँ रोवै लाग्यो। ऊँ नै कूकतो सुण की बास-गली का भाग आया कै के बात है सेठ कैयाँ रोवै है? तो सेठ बोल्यो - हैकनीसो, के बताऊँ? क्यूँ बतावण लायक बात हो तो बताऊँक! इतरी कैय की भर फेर "हूँ हूँ" कर की ओरूँ रोवै लाग्यो। इतैरे में आस-पास हूँ ओर लोग बाग आ भेला हुया हर सेठ नै बूज ताज करण लाग्या कै बेटी का बाप तूँ रोवै ही रोवै है पण तेरै हुयो के? सो तो म्हाँनै बताय। जद सेठ बोल्यो - हे जिकै के माँय नै, के बताऊँ? क्यूँ बताणै लायक बात होय तो बताऊँक। हर ओरूँ "हूँ हूँ" कर की रोवे लागो। जणाँ बाँ में

कोई बूडो बडेरो माणस हो सो ऊँन बीं नै हिंवलाल की बूज्यो कै बावलिया तूँ रोवै ही रोवै पण आखर बात के है सो तो तूँ म्हानै बताय जीं हूँ म्हानै बी यो बेरो लागै कै थारै यो दुख है। जद सेठ सुबकतोर बोल्यो कै रोवूँ न के करूँ मेरी बांई कोल पर की अेक चूसो चडकी रर पेट पर की सुपड़े थाणी कोल कांनी की उतर की भाजग्यो। तो कै कै हुयो चूसो ही तो हो नी। सिंग नो थारै पर की नीसर्यो ही कोनी। जा रै बावला! ई छोटी सी बात खातर ही रोवै लाग्यो। जणां सेठ बोल्या कै थारै भांवे तो आ छोटी सी बात है पण मेरे भांवें भोत मोटी है आज तो मेरे ऊपर की चूसो नीसर्यो है तड़के सापलो नीसर ज्यागो। परस्यूँ इजगर नीसरैगी। सदा नै गेलो घलै है।

कुबूरी

(गणपति स्वामी)

अेक बर की बात है कै अेक हाथी
हांडतो फिरतो कठै हूं बिकानेर की
में आयग्यो। सो बो चरतो फिरतो
रोई मांय की नीसरग्यो। दिनगे
खेतां हाला खेतां में गया तो बां कै
मूं आगै हाथीड़ै का खोज आया
जणां बां कै खोजां को अजरो
होग्यो। क्यूं कै बां हाथी का खोज तो
दूर रया कदे हाथी को नांव बी कोनी
सुण्यो हो। सो सारी रोई का हाली बालदी
उठै भेला होग्या। पण बात को कूंटो कोई
नै बी कोनी पायो। जद बै भाज कर बूज-
बुझाक्ड़ जी नै बुलाय की ल्याया। बूझा-
कड़ दूर हूं ई खोल तातो होतो हर बड़बड़ा-
ता आया। रै कै थे तो सारा ही ढोर हो
भले थारै में तो मासो भर बी अकल कोनी
कै बाप जी थे खिजो ना। म्हे तो अे खोज
जाण्या कायनी। तो कै जाणनियां जाणग्या कै
जांणै अणजांण। पगां कै चाकी बांध की कूद गया मिरगा

रै कै औ तो चोरटा मिरगलो है जिको थारै खेतां में चरकी गया है। इस बां का कोई खोज न पिछाणले इण वासतै आप रै पगां रै चाकलड़ी रा पाट बांध की कूदग्या परा।

Contd.

बूझाकड़ जी रा हाथी – ११

( गणपति स्वामी )

दूसरै दिन बो ई हाथीड़ो फिरतो-घिरतो गवाड़ में आ खड्यो हुयो। सो बीं नै देख कर सारै गाँव कौं कै मन मेंअचलो होग्यो। छेलै नाकै बुझाकड़ जी नै बुलाय की ल्याया। तो बै दूर हूं ई गाल्यां काडता रर बड़बड़ाटा करता आया। रर हाथीड़ै नै

देखताँ परांत बाँ फैसलो सुणायो कै रै
भूवा रो भतीजो थाँ नै ईं रो बी बेरो
कोनी ? कै बाप जी म्हारै माँयलै नै
तो कीं नै बी ठा कोनी । रै कै
या तो मावस री काली रात है सो
बीती जितरी तो बीती हर बाकी को
गोट बनग्यो ।

बूझाकड़ जी हर खूखनी-१२

(गणपति स्वामी)

अेक बर अेक बिकानेरिये नै
कठै अेक खूखनी पड़ी पायगी ।
सो बो बीं नै उठाय कीं गाँ में लेयग्यो
गाँव काँ की खूखनी कदे देख्योड़ी
कोनी ही सो बां कै अचूमो होग्यो

सारै गाँव का माणस गुवाड़ में
खुसखनी कै घेरो घाल की बैठग्या
कै भलै यो कांई रै यो कांई?
पण कोई नै बी ठा कोनी पड़्यो।
तो सेठ नै बुझाकड़ जी नै बुलाया।
तो बै गुणगुणाट करता ई आया।
रै कै हूँ मर ज्याहूँ तो थारो कांई
बणसी। थांनै ई छोटी सी बात रो
बी ठा कोनी पड्यो। यो का तो बड़
लोगां री जेलां रो म्यान है हर का
कोई दो थांनां री कोथली।

ठाकराँ रर ऊँट-१२

(गणपति स्वामी)

अेक ठाकर लोग अेक मुरदै सै ऊँट को पूँछड़ तणा बान्धा रर माग्योड़ी कूँची पर गिदरियो घाल्याँ बजार माँ की चढ्यो नीसरयो। ऊँट नै डिगा खातो देख की अेक हटवै बूज्यो कै ठाकराँ कैयां ऊँट नै करोत कर राख्यो है? जद ठाकराँ पडूतर दियो कै साय घी तो म्हे ईं नै होमण देण कर राख्यो छै। फेर बी यो करोत होय तो म्हा को कै जोर! यो धाड़-काट्यो मरबा जोगो ई छै।

टसकोली-१३

(गणपति स्वामी)

अेक बामण हर अेक कुम्हार दोनूं मसकरा हा। अेक दिन कुम्हारड़ो हाथ में डंडूखलो लियाँ सामै आवतो मिल्यो। तो बामण टसकोली करी कै रै पादा कठै जायगो!

तो उँण मुड़की जाल दियो कै गधेड़ी के पेटमें रै तो कै पाछोई कैयाँ आसग्यो। तो कै आऊँ नी के करूँ आगे बामण जीमै हा। सो मैं रै हूँ चोको उतर ल्याय न।

टसकोली-१८
(चमार)

अेक चमार न्या कर की ल्यायो तो गाँव बड़तॉ हीं बीं नै अेक चोदरी बूज्यो कै रै बलाई! ब्यावड़े पर कितराक रिपिया बठा दिया? तो चमार कयो कै किसाण तीन सै'क। रै तो कै सारा रिपिया घरमें ई हा'क कढ़ारा कढ़ाया! कै किसाण कढ़ारा कढ़ाया रै तो कै या इतणी मागत कैयाँ उतैरगी? कै किसाण! या ही कन्या माता मरदेगी।

टसकोली-१५
(बोरो-धुरियो)

अेक बोहरै हर अेक धुरिये की बजारमें दामाँ पर लड़ाई होगी। धुरिये की अणोदवाल पर बोहरै ने घणी रीस उपड़ी हर बो लाल ताता होकर बोल्यो:- कै तो मेरा दाम गेर दे खाँड खाय की इब की स्यात नहीं तो मैं थी के मुरगै की नासड़ी (चीर) फाड़ गेरूँगा। तो धुरिये बावड़ की जाब दीन्यू के नास फाड़ गेरैगो के मैं चीरड़ाँ की सिभाय की ल्यायो हूँ।

गणपति स्वामी

टसकोली-१६
(जाट-मियूँ)

अेक जाट अेक मुसलमान ने बूज्या के ओलै मियाँ! तेरा के नाँव है। तो उण कया के अेब मेरा नाँव सबदल सेख मज्जफल खाँन है। मेरा ही बूजेगा के मेरे बाप का भी बताऊँ? तो जाट बोल्या:- ऊँट, छुछले! पैली तेरलो तो घोरव लेण दे।

गणपति स्वा॰

टसकोली - १७
(गण पति स्वामी)

अेक अमली अेक कनाई की दुकान पर कधू दूम कर री रर पाणी को गुटलियो लेय री अमल उगाळण नै खखारा करण लाग्यो। तो कनोईड़ै देख री टसकोली करी कै बूडा! खखारै मतना नहीं तो कागलियो आ पड़ैगो। जद बूढ़ै जाब दियो कै कागलियो आ पड़ैगो किसो धारली चासनी डू चोपड़ा रै।

जाट रर बामण - १८
(दय धोया)

अेक बामण अर अेक जाट सीवांजोड़ खेत बाया करता। जेठ कै म्हैनै डूं लेकर कातीसरै ताँणी बे सींवाजोड़ बोज्या करता सींवांजोड़ अलसारी करता सींवांजोड़ हलवावता। रर सींवाँजोड़ लाँवणी करता। इण भाँत साल में छै म्हैनाँ बे सींवाँजोड़ पाड़ौसी रैता।

सो बे हरक्यूं काम नै अेक दूसरै री देखादेखी होड़होड़ करता। होड़होड़ अलसेाटी करता। होड़होड़ पीयो करता। होड़होड़ हलबावता हर होड़होड़ लांवणी करता। पण बाकी सारी वातां में आपसरी में होड़ रैती। इस क्यूं बी काम में अेक दूसरै डूं गैल कोनी रैतो। अेक दिन इसो मेल मिल्यो कै चोदरी हर दादो दोन्यूं अेक सागे मैतां नै पीयो पांवणनै जोड़ै गया। अर बठै दोन्यूं हीं जोड़ कानी (दिशां) जाय री अेक सागे हाथ धोवण बैठ्या। सो आपसरी में होड़होड़ धालका मारण लागग्या। सो पैलां कुण उठै। दादै मन में देखी कै जे तूं पैलां उठग्यो तो जाट ड़ो ऊपरवदतो रै ज्यायगो हर सदा नै टोसो देगो कै दादो अदन्हायो हर पाद दियो होग्यो बिसो को बिसो।" नठ नै तेरो बामण को जमारो रै सो जाट डूं तन्नै पैलां नहीं उठणूं चायो। उन्नै चोदरी बिचारी कै जे तूं दादै डूं पैलां उठखड्यो रयो तो दादो सदा नै तेरै डूं सूग

करैगो। हर बात-बात में नाकसल घालैगो।
हर नित उठ साखी कहैगो कै "आदो न्हालै
कागलो रै आदो न्हालै हड। पड़दो (चोपायो)
न्हावै जाटड़ो रै गुपलो जाँ रो वेड़।" सो चोये
हल भाँलै आज र धक ज्यालो दादे हूँ पैली
नहीं उठणू। सो दोन्यू जणाँ हाडोहाड मचग्या।
उन्नै जारणी देखी कै छोरा को बाबो बोली
बार होगी कैयाँ कोनी आयो? मैं तो भाजग्यो
क्यूं कांई करसी होगी? सो बा चिंत्या कर की
चोदरी कै खोजाँ र लेर आई। घरवाली नै
देखताँ हीं चोदरी दादे नै ओताँणै को आवद
काड्यो। हर बो हूँक की बोल्यो- ओ रै मूगली क मा!
जेठ साड़ में तो बलाई नै हाली कर की हल मुकालेयो।
साँवण-भादवै में ल्हास कर की निनाण करवालेयो।
आसोज-काती में तेरै पीरयाँ नै बुलाय की लाँवणी-
लाटो तवड़ लेये हर फागण पछै निवायै दिनाँ
में मूगली का फेरा कर देये। चोखी दात चरियै
हर कालियो टोरड़ो हर पीलती गाय दायजै में देदेये।
हर मैं तो ई हथधोवै हूँ फसग्यो हूँ सो उठतो सो

ही उडूंगो। जाटड़ै री या बतळावण सुणतां
ही दादै री तोरांण फूलगी। ऊंण देखी कै
अण तो छै-म्हैनां तांणी री समलावणी देदी. सो
यो तो ओलो उडैगो. जद बो रग्य योय री चपदे
नाखै खड़्यो होग्यो.

गणपति स्वामी

## सूमड़ो- सुपारी-१६
### ( गणपति स्वामी )

अेक सूमड़ै कँकरी२ माया जोड़ी हर रजारी वजारी बुणियो. पण आपरी माया नें ना खरची, ना खायी. हर बो आप रै तोसाखाने रिपियाँ रो थापड़ दियाँ राखतो हर आय-गये प्यारै-परसंगी ने दिखावतो के म्हारै पासै इतरो लाव-लिछमी है। अेक दिन ऊँ रो कोई घणूँ मेलू आवियो हर जद सूमड़ै री माया देखी तो घणूँ रैर कर हर बूजियो के साय। इतणी सारी माया थारै पासै कीकर अेकठी हुई? सो ततबीज म्हाने बी बताईजै। जद सूमड़ो उवाँ नै आपरी रसोई माँय लेज्यायनै संकूरिये अडोरै रै माँय पुईज्योड़ी सुपारी बारूँधै लटकती दिखाई. डोरै रा दोनूं पासा बारूँधा रै दोनूँ पासाँ बँधीज्योड़ा हा हर सुपारी बीच में लटके ही. रब सुपारी कोंनी सैंन कर की रोलै सीक कनसोरियो कीरियो के आ सुपारी बारै बरस री टँग्योड़ी रै

थाल आरोगण रै पाछै जद म्हौरे छालियो खावण री मन रै मांय आवै जद मैं इण सुपारी नें बाके (मुंह) रै मांय लेयनैं सैंठो चापेर चूंग-चाट ल्यूं हर छालिये री मल मेट ल्यूं. म्हौरे कठै दरब जोड़वा रा औड़ा-औड़ा भेद है हन उवां भेदां रै मांय हूं यो अेक भेद थांनै बताइजियो है. इण सुपारी हूं मैं बी म्हारी अवे जिनगी नित रो छालिये री मल मेटतो थको बिताय देहूं हर आई सुपारी म्हौरे टाबरां सारू म्हौरे लारै रह ज्यासी. थां नें बी प्यारा जी। जे धन जोड़नू होवै तो औड़ी २ उपावां हूं घर रो काम चलावो.

जाटड़ो'र मीयाँ - २०,
( गणपति स्वामी )

तीन मीयाँ मिल कर कुमाबा नै दसावर
चाल्या. गेलै में बाँ नै अेक जाट मिल्गो
बो बोल्यो - म्हारड़ो म्हाँनै बी दसावर ले
चालो. तो कह्यो ले चालस्याँ. सो मीयाँ
जाटड़ै नै बी सागै कर लियो. चालताँ
बाँ नै आथण हुइयो हर बाँ आप का डेरा
डाँड़ा [illegible] लिया. इब उणाँ रोटी-रवरै को

सरतर पचायो. हर च्यारूं जणॉं सॉमलात
में खीर रॉंधी. इब मीयॉं जाल रच्यो
के जारड़ै के पॉंती की खीर बी आपॉं ही.
खाल्यॉं तो मजैदारी रहै. खीर रंधी. तो जाट
बोल्यो- ल्यावो खीर खॉंवॉं. जद मीयॉं पडूतर
दियो के खीर इब नहीं दिनगे खॉंवॉंगा. सो
इब तो आपॉं सोज्यास्यॉं हर रातनै जीं नै
सै सूं चोखो सपनूं आसी बो सब सूं पैलां
धापकी खीर खासी हर जीं नै बीजो चटियो
सपनूं आसी बो बीजो धापकी खीर खासी.
जीं नै तीजो चटियो सपनूं आसी बो

तीजो थापको खीर खासी. हर जीं नै सब सूँ न्याउ सपनूँ आसी बो सब सूँ पाछै बँची खुची खीर-खुरचण खासी. ईण भाँत आधे-न्याउ सपनै साबू सैरबारी खीर खावण की बात राखी. पण जाटड़ो बी घणू हुसतम बाज हो. सो बो मीयाँ को फैकट समजग्यो ऊँण मन में. कही के थे मन्नै खीरबिना राखणूँ चावो हो पण मैं थाँनै खीर बिना राखधूँ जद जाणियो. इब बे कोरी २ टोबड़ी पर सोयग्या. पड़तो पाँण मीयाँ की तो आँख लागगी क्यूँकै सारै दिन की बाँ कै गेलै की हर चढ़ोचोड़ी ही. पण जाटड़ो जरड़ू हो सो हर कै क्यूँ बी सारै कोनी हुयो हर फेर ऊँ कै पट में खीर खातर बिलाया लैड़े हा. सो ऊँ कै नींद साकड़ी बी को आई नी. मीयाँ नै निरबै सूत्या देख की जाटड़ो उठियो हर हाँडी कै मूँ लगाय की चसड़ २ सा खीर सोसग्यो हर हाँडली नै चाट-पूँछकी

हर उ बो ठकरां देय की बैयाँ हो जचारी. इब खीर हूँ धायो धपनूं जाटड़ो बी नचीत हो कर सोयग्यो. हर सणक-सणक इसी मीठी नींद आई के सारी रातबोको रुणक्यो-न-मुणक्यो. दिनगली के जाताँ मीयाँ की आँख खुली हर बे खीर का खाऊ हबड़क की तावला तावला उठ्या. हर उठताँई जाटड़े नै बी हेलाल करी. पण बो क्यां को जागतो. नठनै घींसाघरड़ो करकी हर ठरड़ की जाटड़े नै बैठ्यो करयो. हर बो जाण करतो ओर ऊंग की गुड़ग्यो. तो उणाँ ओर गाथल की बैठ्यो करयो. रै के खीर खास्याँ सो आप आप का सुपना सुणाओ. तो जाटड़ो बोल्यो के आपई सुणावो. (क्यूंके बो तो खीर खायाँ बैठ्यो हो) जद अेक मीयूं बोल्यो के मुजे खाब आया के मैं रूमस्याम का बादस्या हो गया. ओर व्हाँ की बदस्यात खूब भोगी. दूसरो बोल्यो के मैं खाब में दिल्ली का

बादस्या बण गया. तीसरै कह्यो कै मैं
सातवैं आसमान पर गया ओर व्हाँ
घूम२ कर खूब सैल करी. चोथाँ जाटड़
को सरो आयो जद बो आँख रगड़तो२
बोल्यो कै भाइड़ो! थाँनै सै नै सरूप२
सपना आया पण मन्नै तो मोत न्याउ आयो
सातवैं अरस पर हूँ बा थारली अल्लालाल
खूखनी पहर की आपणैं डेरै में उतरी
हर आपणी हाँडी की सारी खीर खासगी.
मैं तो घणूँई आडेर फिरयो र मोत सूर की
सोगन कढाई पण बीं मेरी तो ओक बी
को सुणी न। हर मीयाँ के टामो गयो
हर बाँ बेगाँ साँ हाँडी उघाड़ी तो रीती
बडँग ल्हादी. जद बे बोल्या अबे जट।
हमें अवाज क्यूँ नरों दी. जद बो करलक्यो
कै मैं तो घणाँई हेला मार२ की कँठ
फाड़ लिया पण थे कोई तो रूमस्याम में बैठा
हो र कोई दिल्ली में बादस्या बणरयो हो हर कोई
सातवैं अरस पर घूमै हो. सो मेरला हेला थाँनै कैठै सुणहा

जाटड़ा'र उकीलजी. २१,
( गण पति स्वामी )

अेक गाँव रै मॉयजाटॉ कै च्यार भाई हा. बॉं रै कोई तीसैरै- तिवाड़ै सूँ मुकदमू आय पड़ियो. उवॉं रो कदे राज-तेज रै मॉयजावण रो काम नहीं पड़ियो. इण कारण सूँ ज्वै भागार अेक मुसलमान उकील रै पासै जाय नी कयो कै म्हारै मॉय अलवाड़ आ पड़ी सो ओ राफड़ थॉं सुलजायॉ सुलजसी. म्हे थॉंने थारी सरवरी पूँछी देस्यॉ. पूँछो रा भूखा उकीलजी बोलिया कै राज रो काम तो मैं समेड़ लेहूँ पण थॉं म्हारै घर रो भीमो सम्हाय लीज्यौ. भीमो ओ करणू है कै म्हारी "मा" कॉंथरी (बीमार) है सो ई री माखियॉं उडावता रन पाणी. पावता रीज्यो. इस यो ध्यॉन राखज्यो कै मा री जुबान थाकिल है क्यूँ कै आ जलम- गूँगी है. सो तिसॉं मरती न मर जाय. बीजॉं बछेरी री निगै राखज्यो. मोकलो दाणू दीज्यो, घास चराज्यो हर पाणी पाज्यो। देखज्यो कदे भूखी- तिसी न रहज्याय.

तीजाँ, भूरी घामड़ ढोर नै धपाई राखज्यो तो कै भलो। सारा काम सखरा तेवड़स्यां. अतरी समझावण देय हर उकील जी तो राज में गया हर उवै च्यारूँ भाई घर रै मीमै लाग्या. अेक जणें तो भैंस को लारो पकड़्यो. सो धूंणक गुँवार का परोला राँध की हर अदसीज्या भैंसड़ नै खुवा दिया हर ऊपर सूँ पाणी पा दियो। बै बूंदे भूखी रह्ज्यागी तो उकील जी ओलमाँ दीगा. सो पेट फाट की ओरड़ी चौतो रोगी. बीजै घो नै २०-१५ सेर दाँणू देय हर पाणी पाय की बाँधदी सो बा बी पेट फाट कर मरगी. तीजो उकील जी की मा कै बिलग्यो. सो मैं लारो पाणी को र बूडली रै मूँ में ओजदे. मरै गडलोरै बूडली रै कंठा मेंनाख दे. तो च्यार-पाँच घड़ा पाणी का भरया पड़्या हर सो सारो पाणी बूडली में ओज दियो. जे माँखी उडकी बूडली रै मूँ पर बैठै तो जाटियो उठाय की हर आलै खूँस की दे पदोड़. सो बूडली नै बी आडी पसारदी. दूसरै दिन मीयूँ आयो तो सारो घर उजड़ेा पायो.

जाटड़ो - उद्दीन जी -

पूँजी-ओमन

বাণিজ্যের খবর